

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री कृष्ण कृपा कटाक्ष



श्रीमद् भागवत का यह सार
भगवद् भक्ति ही आधार

श्री कृष्ण कृपा कटाक्ष

भजे ब्रजैकमण्डनं समस्तपापखण्डनं,
स्वभक्तचित्तरंजनं सदैव नन्दनन्दनम् ।
सुपिच्छगुच्छमस्तकं सुनादवेणुहस्तकं,
अनंगरंगसागरं(न) नमामि कृष्णनागरम् ॥ 1 ॥

मनोजगर्वमोचनं विशाललोललोचनं,
विधूतगोपशोचनं(न) नमामि पद्मलोचनम् ।
करारविन्दभूधरं स्मितावलोकसुन्दरं,
महेन्द्रमानदारणं(न) नमामि कृष्णवारणम् ॥ 2 ॥

कदम्बसूनकुण्डलं सुचारुगण्डमण्डलं,
ब्रजांगनैकवल्लभं(न) नमामि कृष्णादुर्लभम् ।
यशोदया समोदया सगोपया सनन्दया,
युतं सुखैकदायकं(न) नमामि गोपनायकम् ॥ 3 ॥

सदैव पादपंकजं मदीय मानसे निजं(न),
दधानमुक्तमालकं(न) नमामि नन्दबालकम् ।
समस्तदोषशोषणं समस्तलोकपोषणं,
समस्तगोपमानसं(न) नमामि नन्दलालसम् ॥ 4 ॥

भुवो भरावतारकं भवाब्धिकर्णधारकं,
यशोमतीकिशोरकं(न) नमामि चित्तचोरकम्।
दृगन्तकान्तभंगिनं सदा सदालिसंगिनं(न),
दिने दिने नवं(न) नवं(न) नमामि नन्दसम्भवम् ॥ 5 ॥

गुणाकरं सुखाकरं(ङ्) कृपाकरं(ङ्) कृपापरं,
सुरद्विषत्रिकन्दनं(न) नमामि गोपनन्दनम्।
नवीनगोपनागरं(न) नवीनकेलिलम्पटं(न),
नमामि मेघसुन्दरं(न) तडित्प्रभालसत्पटम् ॥ 6 ॥

समस्तगोपनन्दनं हृदम्बुजैकमोदनं(न),
नमामि कुंजमध्यगं प्रसन्नभानुशोभनम्।
निकामकामदायकं(न) दृगन्तचारुसायकं,
रसालवेणुगायकं(न) नमामि कुंजनायकम् ॥ 7 ॥

विदग्धगोपिकामनोमनोज्ञतल्पशायिनं(न),
नमामि कुंजकानने प्रवृद्धवह्नीपायिनम्।
किशोरकान्तिरंजितं(न) दृगंजनं सुशोभितं(ङ्),
गजेन्द्रमोक्षकारिणं(न) नमामि श्रीविहारिणम् ॥ 8 ॥

यदा तदा यथा तथा तथैव कृष्णसत्कथा,
मया सदैव गीयतां(न) तथा कृपा विधीयताम्।
प्रमाणिकाष्टकद्वयं(ञ्) जपत्यधीत्य यः(फ्) पुमान्,
भवेत्स नन्दनन्दने भवे भवे सुभक्तिमान् ॥ 9 ॥

इति श्री मज्जगदगुरू आदि शंकराचार्य भगवतः
कृतो श्री कृष्णाष्टकम् सम्पूर्णम्।